पॉवर लाइनें जानवरों को डराती हैं

कई जानवर हाई टेंशन पॉवर लाइन्स से कतराते हैं। इनमें रेनडीयर जैसे कुछ स्तनधारी जीव और पक्षी भी शामिल हैं। अब कुछ वैज्ञानिकों ने इसकी व्याख्या के लिए एक परिकल्पना पेश की है। युनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन के नेत्र संस्थान के ग्लेन जेफ्री और उनके साथियों का मत है कि ये जानवर पॉवर लाइनों से निकलने वाली पराबैंगनी किरणों की वजह से उनसे दूर-दूर रहते हैं।

वैसे तो गांवों, शहरों और खेतों के बीच से गुज़रने वाली ये पॉवर लाइनें पूरे नज़ारे को बिगाड़ती हैं मगर इनमें से जो पराबैंगनी रोशनी निकलती है वह हम इंसानों के लिए अदृश्य ही रहती हैं। मगर जो जानवर पराबैंगनी प्रकाश को देख सकते हैं, उनके लिए तो ये पॉवर लाइनें भायनक खतरे का संकेत होती हैं।

कंज़र्वेशन बायोलॉजी नामक पत्रिका में प्रकाशित एक शोध पत्र में जेफ्री व उनके साथियों ने कहा है कि रेनडीयर, कुतरने वाले जंतु और पक्षी पराबैंगनी रोशनी को 'देख' सकते हैं। इस वजह से इन्हें पॉवर लाइनों के आसपास एक आभामंडल नज़र आता है। इस आभामंडल को देखकर वे समझ जाते हैं कि यह इलाका सुरक्षित नहीं है।

वैसे रेनडीयर की आंखों में पराबैंगनी किरणों को ग्रहण करने के लिए उपयुक्त प्रोटीन नहीं पाए जाते मगर फिर भी उनकी आंखें पराबैंगनी प्रकाश के प्रति संवेदी होती हैं।

यदि जेफ्री के दल की यह परिकल्पना सही है तो इसका ध्यान वन्य जीव संरक्षण में रखना होगा। यदि ये पॉवर लाइनें सचमुच इन जानवरों के लिए एक बाधा का काम करती हैं तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जैसे पॉवर लाइनों के दो तरफ की आबादियों में मेल-मिलाप में रुकावट आ सकती है और कई प्रजातियों के प्रवास में दिक्कत आ सकती है। ऐसे में पॉवर कंपनियों को और ज़्यादा ध्यान देना होगा कि लाइनें कहां डालें।

वैसे अभी इस परिकल्पना की पुष्टि नहीं हुई है। जैसे कुछ दृष्टि विशेषज्ञों का कहना है कि यह तो सही है कि रेनडीयर जैसे प्राणी पराबैंगनी के प्रति संवेदनशील होते हैं और इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे रात के समय पॉवर लाइनों से दूर रहेंगे। मगर ये प्राणी तो दिन के समय उजाले में भी पॉवर लाइनों से बचने की कोशिश करते हैं, जबकि दिन में तो चारों ओर पराबैंगनी प्रकाश फैला होता है।

ऐसे सवालों को लेकर जेफ्री अपने साथियों के साथ आगे ज़्यादा व्यवस्थित अध्ययन की योजना बना रहे हैं। इसके लिए उन्होंने एक मशीन विकसित की है जो ठीक पॉवर लाइन के समान पराबैंगनी प्रकाश का आभामंडल पैदा करती है। इसे लेकर वे आर्क्टिक क्षेत्र में प्रयोग करने जा रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***